pkjk vuHkkx
vuqokf'kdh ,o ikS/k çtuu foHkkx
pkS/kjh pj.k flag gfj;k.kk Ñf"k fo'ofo|ky;] fglkj

&&&&&&

vDrqcj& uoEcj eghus ds fy, Ñf"k ijkeZ'k

tbZ

Hkwfe% इसकी सफल खेती के लिए रेतीली–दोमट भूमि सबसे उपयुक्त होती है। यह लूणी व सेम वाली भूमियों में नहीं उगाई जा सकती।

mUur fdLesa

¼d½ ,d dVkbZ okyh fdLesa %&

vks-,l- 6 o vks-,l- 7 % ये दोनों किस्में समस्त हरियाणा के जई उगाने वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त हैं। ये शीघ्र व सीधी बढ़ने वाली किस्में हैं। इनके पत्ते चौड़ें तथा बालियां निकलने के समय ऊपर का पत्ता सीधा खड़ा होता है। इनकी हरे चारे की पैदावार 200–220 क्विंटल प्रति एकड़ है।

¼[k½ T;knk dVkbZ okyh fdLesa %&

¼v½ ,p-,Q-vks- 114 % यह किस्म शीघ्र सीधी बढ़ने वाली तथा सम्पूर्ण हरियाणा के लिए उपयुक्त है। यह कटाई के बाद जल्दी–जल्दी बढ़ती है। इसके दाने मोटे होते हैं तथा हरे चारे की पैदावार 220–240 क्विंटल प्रति एकड़ है।

¼c½ gfj;k.kk tbZ 8 % यह किस्म हरियाणा प्रांत के लिए वर्ष 1997 में विकसित की गई है। इसके हरे चारे की पैदावार लगभग 240–260 क्विंटल प्रति एकड़ है। इसकी पत्तियां बहुत चौड़ी होती है। यह किस्म पुर्नवृद्धि के मामले में दूसरी किस्मों से बेहतर पाई गई है। इसके दाने मध्यम आकार के होते हैं।

fctkbZ dk le;

जई की एक कटाई देने वाली किस्मों की बिजाई का उचित समय पूरा नवम्बर है। दो या अधिक कटाई देने वाली किस्मों की बिजाई का उपयुक्त समय 15 अक्टूबर से 30 अक्टूबर होता है। पछेती बिजाई करने पर दूसरी व तीसरी कटाई से हरे चारे की पैदावार कम मिलेगी।

cht dh ek=k

हल्के बीजों वाली किस्मों (ओ.एस. 6, ओ.एस. 7 व एच.जे. 8) का 30 कि.ग्रा. एवं मो्टे बीजों वाली किस्मों (एच.एफ.ओ. 114) का बीज 40 कि.ग्रा. प्रति एकड़ प्रयोग करें।

fctkbZ dk rjhdk

जई की बिजाई 22–25 सै.मी. चौड़ी लाईनों में करनी चाहिए। उचित नमी की अवस्था में केरा विधि से तथा कम नमी वाली भूमि मे पोरा विधि द्वारा बिजाई करनी चाहिए। बढ़ियां अंकुरण के लिए भूमि में प्रर्याप्त नमी का होना आव यक है।

cht kipkj

बीज का उपचार पी.एम.ए. (100 ग्रा. पी.एम.ए., 40 कि.ग्रा. जई के बीज के साथ) से करें। इससे कांगियारी नामक बिमारी से बचाव हो जाता है।

moj d

जई की फसल में 16 कि.ग्रा. नाईट्रोजन (35 किलोग्राम यूरिया) व 12 कि.ग्रा. फास्फोरस (75 किलोग्राम सुपर फास्फेट) प्रति एकड़ के हिसाब से बिजाई के समय देनी चाहिए। जई के बीज को बिजाई करने से पहले एज़ोटोबेक्टर से उपचारित करें। इसके करने से 6–8 किलो नत्रजन प्रति एकड़ की बचत होती है। उपचारित करने के लिए एक पैकेट एज़ोटोबेक्टर 10 किलो बीज के लिए काफी है।

cjlhe

Hkfe %& बरसीम के लिए बढ़िया जल निकास वाली दोमट व उपजाऊ भूमि ही उपयुक्त होती हैं। यह हल्की व रेतीली मिट्टी में अच्छी पैदावार नहीं देती।

mUur fdLe

eLdkoh %&यह जल्दी बढने वाली, पौष्टिक एवं स्वादिष्ट हरा चारा देने वाली किस्म है। यह 5–6 अच्छी कटाइयों देने में सक्षम है। इससे लगभग 240–270 क्विंटल हरा चारा एवं 1.4–1.6 क्विंटल बीज प्रति एकड. प्राप्त होता है।

,pch 1 %& यह किस्म वर्ष 2005 में हरियाणा में बिजाई के लिए जारी की गई है। यह किस्म तना एवं जड. गलन रोगों की प्रतिरोधी है। यह देर तक हरा चारा देती है। इस किस्म से हमें 270–290 क्विंटल हरा चारा एवं 1.6–1.8 क्विंटल बीज की पैदावार प्रति एकड. प्राप्त होती है। इसके हरे चारे में प्रोटीन की मात्रा मैस्कावी से ज्यादा होती है।

,p-ch- 2%& यह नई किस्म वर्श 2014 में हरियाणा में बिजाई के लिए जारी की गई है। यह किस्म तना गलन बीमारी की प्रतिरोधी है। यह देर तक हरा चारा देती है। इसकी 5–6 कटाईयां तक ली जा सकती हैं। इससे लगभग 300–325 क्वि/एकड़ हरा चारा प्राप्त होता है। इससे लगभग 1.3–1.4 क्विंटल बीज प्रति एकड़ प्राप्त होता है।

[ksr dh rS;kjh %& खेत को 2–3 बार हल से गहरा जोतकर तथा सुहागा लगाकर तैयार करना चाहिए। अच्छी पैदावार के लिए खेत समतल व खरपतवार रहित होना चाहिए।

fctkbZ dk le; %& इसकी बिजाई के लिए अक्तूबर महीना उपयुक्त है। इसके बाद बिजाई करने से कटाईयां कम आती हैं। अतः चारे की उपज भी कम मिलती है।

cht ,oa fctkbZ %& बीज की मात्रा 8–10 किलोग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें। बीज हमे ाा वि वसनीय केन्द्र से ही खरीदें। पहली कटाई में अच्छी पैदावार के लिए बरसीम के साथ चाईनिज सरसों का 0.5 किलोग्राम बीज अथवा 10 किलो जई प्रति एकड़ मिलाएं। इसकी बिजाई पानी से भरे खेत में बीज को छिड़क कर की जाती है। बीज छिड़कते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि तेज हवा न चल रही हो।

Vhd: l: chtkipkj ½& बरसीम जहां पहली बार बोएं उन खेतों में इसके बीज को उपचारित करने की जरूरत होती है क्योंकि इसके विकास के लिए एक वि ोश प्रकार के जीवाणु की जरूरत होती है जो कि उन खेतों में नहीं पाया जाता। इन जीवाणुओं का टीका स्थानीय कृशि विकास अधिकारी, किसान सेवा केन्द्र अथवा माइक्रोबायोलोजी विभाग, चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृशि वि वविद्यालय, हिसार से प्राप्त किया जा सकता है जो कि एक एकड़ बीज उपचार के लिए काफी है। इस टीके के एक पैकेट की कीमत मात्र 10 रूपये है।

Vhdkdj.k dk rjhdk ½&100 ग्राम गुड़ का आधा लीटर पानी में घोल तैयार करें। इसमें बरसीम के टीके का एक पैकट मिला दें। इस घोल को 8–10 किलों बीज में अच्छी तरह मिला दें ताकि प्रत्येक बीज के ऊपर इसका लेप लग जाए। अन्त में बीज को छाया में सुखाएं।

moZjd ½& एक एकड़ बरसीम के लिए 10 किलोग्राम नाईट्रोजन तथा 28–30 किलोग्राम फास्फोरस उर्वरक बिजाई से पहले दें। (इसके लिए 22 किलोग्राम यूरिया व 175 किलोग्राम सुपर फास्फेट का प्रयोग करें) ।

flapkbZ;k ½& बरसीम में पहली सिंचाई महत्त्वपूर्ण है जो हल्की मिट्टी में बिजाई के 3–5 दिन बाद व भारी मिट्टी में 8–10 दिन बाद अव य दें। इसके बाद की सिंचाईयां अक्टूबर व नवम्बर माह में 10–12 दिन के अन्तर पर करें।

gkfudkjd dhM+s ,oa mudh jksdFkke ½&

dkyh phVh

udlku ½& यह बिजाई के बाद, अंकुरित होने से पहले ही बीज को उठा ले जाती है।

jksdFkke ½& इन चींटियों के रहने वाले स्थानों का पता लगाकर वहां मिथाईल पैराथियोन (2 प्रति त चुर्ण) का बुरकाव करे।